Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	Inscript 21st December 2019 Shift 2
Subject Name:	Inscript
Creation Date:	2019-12-21 17:55:41
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No
Show Watermark on Console?:	No
Highlighter:	No
Auto Save on Console?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	2549891922
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	2549892534
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	2549892547
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 25498928753 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

एक बार की बात है, अकबर और बीरबल शिकार पर जा रहे थे। अभी कुछ समय हुआ था कि उन्हें एक हिरण दिखा। जल्दबाजी में तीर निकलते हुए अकबर अपने हाथ पर घाव लगा बैठा। अब हालात कुछ ऐसे थे कि अकबर बहुत दर्द में था और गुस्से में भी।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Standard
Keyboard Layout: Inscript
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes

Actual

Group Number :	2
Group Id :	2549891923
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	0
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	2549892535
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	2549892548
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 25498928754 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

सुव्यवस्थित ध्वनि, जो रस की सृष्टि करे, संगीत कहलाती है। गायन, वादन व नृत्य तीनों के समावेश को संगीत कहते हैं, इन तीनों के एक साथ व्यवहार से संगीत शब्द बना है। गाना, बजाना और नाचाना प्रायः इतने पुराने है जितना पुराना आदमी है। बजाने और बाजे की कला आदमी कुछ बाद में खोजी-सीखी हो, पर गाने और नाचने का आरंभ तो न उसने केवल हजारों वर्ष पहले कर लिया होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। गायन मानव के लिए प्रायः उतना ही स्वभाविक है जितना भाषण। मनुष्य ने गाना कब से प्रारंभ किया, यह बतलाना उतना ही कठिन है जितना की कब से उसने बोलना प्रारंभ किया है। परंतु बहुत काल बीत जाने के बाद उसके गायन ने व्यवस्थित रूप धारण किया। जब स्वर और लय व्यवस्थित रूप धारण करते हैं तब एक कला का प्रादुर्भाव होता है और इस कला को संगीत, म्यूजिक यौ मौसीकी कहते है। युद्ध, उत्सव और प्रार्थना या भजन के समय मानव गाने बजाने का उपयोग करता चला आया है। संसार में सभी जातियों में बांसुरी इत्यादि फूंककर बजाए जाने वाले, कुछ तारों को झंकत करके बजाए जाने वाले और कुछ चर्म का उपयोग कर ताडित करके बजाए जाने वाले वादन यंत्र उपयोग किए जाते रहे हैं जिन्हें क्रमशः सुषिर, तत और अवनद्ध या आनद्ध वादन यंत्र कहा जाता है, ठोंककर बजाए जाने वाले उपकरणों को घन कहा जाता है। भारत से बाहर अन्य देशों में केवल गीत और वादन को संगीत में गीनते है और नृत्य को एक भिन्न कला माना जाता है। भारत में नृत्य को भी संगीत में केवल इसलिए गिन लिया गया क्योंकि उसके साथ गीत एवं वादन यंत्रों का प्रयोग हमेशा किया जाता रहा है। ऊपर लिखा जा चुका है कि स्वर और लय की कला को संगीत कहते है। स्वर और लय गीत और वाद्य दोनों में मिलते है, किंतु नृत्य में लय मात्र है, स्वर नहीं। हम संगीत के अंतर्गत केवल गीत और वाद्य की चर्चा करेंगे, क्योंकि अन्य देशों में भी संगीत से केवल इसी अर्थ में व्यवहार किया जाता है। संगीत का आदिम स्त्रोत प्राकृतिक ध्वनियां ही है। संगीत युग से पहले के युग में मनुष्य ने प्रकृति की ध्वनियों और उनकी विशिष्ट लय को समझने की कोशिश की। हर तरह की प्राकृतिक ध्वनियां संगीत का आधार नहीं हो सकती, अतः भाव पैदा करने वाली ध्वनियों को परखकर संगीत का आधार बनाने के साथ-साथ उन्हें लय में बांधने का प्रयास किया गया होगा। प्रकृति की वे ध्वनियां जिन्होने मनुष्य के मन-मस्तिष्क को स्पर्श कर उल्लसित किया, वही सभ्यता के विकास के साथ संगीत का साधन बनीं। दार्शनिकों ने नाद के चार भागों परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी में से मध्यमा को संगीतपयोगी स्वर का आधार माना। डार्विन ने कहा कि पशु रति के समय मधुर ध्वनि करते है, मनुष्य ने जब इस प्रकार की ध्वनि का अनुकरण आरंभ किया तो संगीत का उद्भव हुआ। कार्ल स्टम्फ ने भाषा उत्पत्ति के बाद मनुष्य द्वारा ध्वनि की एकतारता को स्वर की उत्पत्ति माना। भारतेन्दु हरिशचन्द्र के अनुसार संगीत की उत्पत्ति मानवीय संवेदना के साथ हुई।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Standard
Keyboard Layout: Inscript
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes